वृद्ध-आश्रम



जब से नानी सनशाइन होम गई हैं तब से टिम्मी उनसे नहीं मिला है. उनकी कूल्हे की हड्डी टूट गयी है और उन्हें निरंतर देख-भाल की आवश्यकता है. आज टिम्मी अपने माता-पिता के साथ नानी को मिलने जा रहा है. “यह बहुत ही अच्छी जगह है,” भीतर जाते समय माँ कहती है. लेकिन टिम्मी को ऐसा नहीं लगता.

नानी सदा की भांति प्रसन्नचित लगती हैं और अपने व्यवहार से माँ भी यह दिखाने का प्रयास करती है कि वह खुश और उत्साहित है. टिम्मी समझ नहीं पाता कि सब ऐसा ढोंग क्यों कर रहे हैं कि कुछ भी गलत नहीं है.

यह हृदय-स्पर्शी कहानी एक ऐसे परिवार की है जिसे एक कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ रहा है. परिवार के लोग अंततः समझ जाते हैं कि वह एक दूसरे से कितना प्यार करते हैं.

वृद्ध-आश्रम



माँ और पिता और मैं नानी को देखने जा रहे हैं. वह मेरी माँ की माँ हैं. वह हमारे साथ ही रहती थीं. लेकिन पाँच हफ्तों से वह एक वृद्ध आश्रम, सनशाइन होम, में रह रही हैं. अभी कुछ देर और वह वहीं रहेंगी, शायद सदा के लिए.

जब नानी गिर गईं और, कूल्हे की हड्डी टूटने के कारण चल न पाईं, तब से मैंने उन्हें नहीं देखा......क्योंकि डॉक्टर का कहना है कि अब उन्हें निरंतर देख-भाल की आवश्यकता है. मैंने उन्हें इस स्थिति में नहीं देखा है और मुझे थोड़ा डर लग रहा है. लेकिन यह बात मैंने किसी से नहीं कही है.

पिता ने और मैंने नानी के लिए कुछ फूल तोड़ कर इकट्ठे कर लिए हैं.

नानी को देने के लिये स्कूल ड्रेस में ली गई मेरी नई फोटो माँ ने अपने पर्स में रख ली है. अब हम तैयार हैं.





सनशाइन होम बस स्टॉप के ठीक सामने है. इसकी इमारत वर्गाकार है और उस पर हरे रंग का पेंट हो रखा है.

“कितनी बेकार जगह है,” मैंने कहा और माँ बोली, “ऐसा मत बोलो, टिम्मी. यह बहुत ही अच्छी जगह है.”

बस स्टॉप के निकट छोटी सी एक मार्किट है. पिता ने वहां से नींबू का शरबत लिया और मेरे लिए एक गुब्बारा लिया, जिस पर एक शब्द छपा था, **‘प्यार’.**

गुब्बारा ले जाना मुझे लज्जाजनक लगता है और मुझे ख़ुशी थी कि मुझे इसे दूर तक नहीं ले जाना है.

सनशाइन होम के द्वार तक एक रैंप बना है.

मेरे पेट में दर्द सा होता है और मैं वहाँ से भाग जाना चाहता हूँ. पिता मेरा हाथ थाम लेते हैं .मैं हाथ पीछे खींचता हूँ.

‘क्या बात है, टिम्मी?”

“कुछ नहीं....अह....”

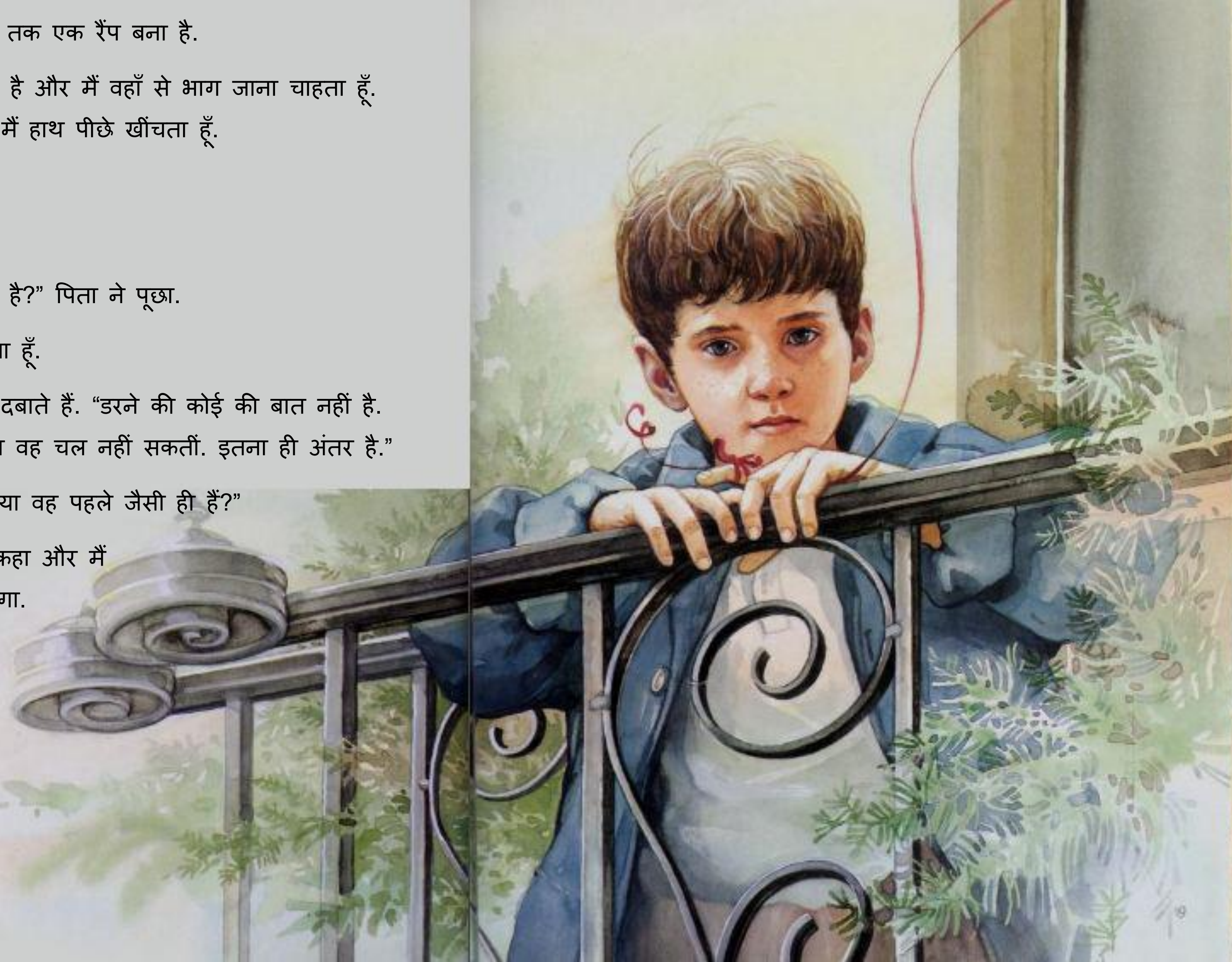
“क्या तुम्हें डर लग रहा है?” पिता ने पूछा.

मैं अपना सिर झुका देता हूँ.

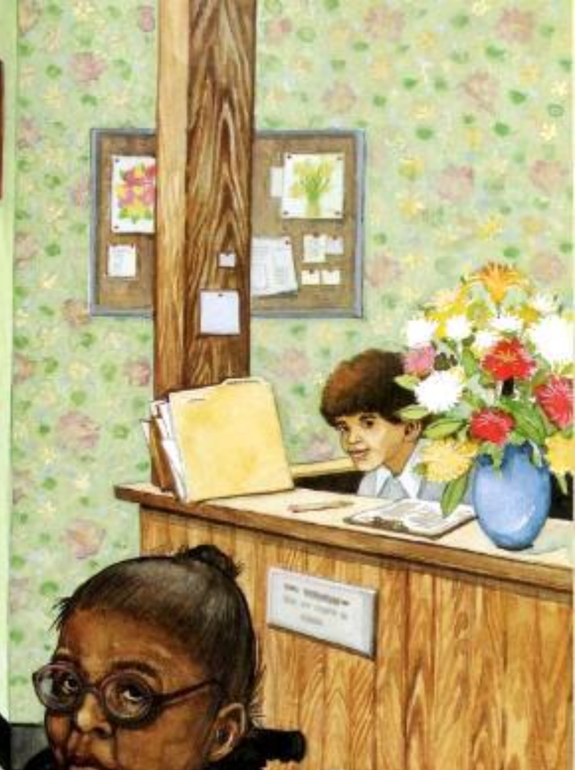
पिता हौले से मेरा हाथ दबाते हैं. “डरने की कोई की बात नहीं है. वह तुम्हारी नानी हैं. बस अब वह चल नहीं सकतीं. इतना ही अंतर है.”

“सच में,” मैंने पूछा. “क्या वह पहले जैसी ही हैं?”

“हाँ, सच में,” पिता ने कहा और मैं थोड़ा अच्छा महसूस करने लगा.





भीतर एक डेस्क है और उस पर बैठी एक नर्स हमें देख कर मुस्कराती है. एक लंबा गलियारा है जो दूर तक चला जा रहा है. गलियारे में कई वृद्ध अपनी व्हीलचेयरों में बैठे हैं. अधिकतर वृद्ध बैठ-बैठ सो रहे हैं, कुछ हाथ हिला कर हमारा अभिनंदन करते हैं.

हम भी उनकी ओर हाथ हिलाते हैं.

मुझे एक गंध का अहसास होता है. यह माउथवाश की गंध लगती है या फिर उस टिकिया की गंध जिसे माँ शौचालय में लटका देती है.



"सब कुछ कितना साफ़-सुथरा है!" माँ पिता से ऐसी आवाज़ में कहती है जो मैंने पहले कभी नहीं सुनी, उत्साह और प्रसन्नता से भरी हुई. मुझे लगा की सनशाइन होम में वह ऐसी आवाज़ में ही बात करती है. "फर्श को इतना चमका कर कैसे रखते हैं?"

फर्श सच में बहुत चमकीला है, आईने के तरह, जिसमें व्हीलचेयरों का उलटे प्रतिबिम्ब बन रहे हैं.

"नानी वहाँ हैं!" माँ झटपट चलती है. पिता धीरे-धीरे पीछे आते हैं. मैं और भी धीरे चलता हूँ.



नानी अपने कमरे के बाहर व्हीलचेयर में बैठी हैं. उन्होंने सीट बेल्ट भी बाँध रखी है. उन्होंने सफ़ेद रंग का स्वेटर पहन रखा है. मोतियों की माला और नीले रंग की कान की बालियाँ, जो क्रिसमस पर मैंने उन्हें दी थी, वह भी पहन रखी हैं. पिता ने ठीक कहा था. नानी बिलकुल नहीं बदली, बस उनके बाल घुंघराले हैं, पहले की तरह सीधे नहीं.

“तुमने अपने बाल बनवाएं हैं,” नानी का हाथ थपथपाते हुए माँ ने कहा. “और अपने नाख़ून भी.”

नानी ने मेरी और देखकर आँख झपकाई. “मैं खूब सुंदर लगती हूँ न, क्यों? हेलो, टिम्मी.”

मैंने प्यार से उनके गाल को चूमा. उन्हें हमारे उपहार अच्छे लगे. माँ कमरे से फूलदान ले आई और उसमें फूल सज़ा कर रख दिए. उसने नानी को फूलों को सूँघने दिया. फिर फूलदान को अपनी जगह रख दिया. पिता ने गुब्बारा उनकी व्हीलचेयर से बाँध दिया. जैसे ही गुब्बारा उड़ता हुआ छत की ओर गया हम सब ऊपर देखने लगे.

“प्यार,” नानी ने कहा. “यह सबसे सुंदर शब्द है. धन्यवाद, टिम्मी.”

कुछ वृद्ध जो सो नहीं रहे थे, अपनी व्हीलचेयरें घुमा कर हमारे निकट ले आये.

माँ और पिता ने उनका अभिवादन किया, “हेलो, पर्ल. हेलो, विन्नी. हेलो, चार्ली.” वह सब को जानते थे.

“यह मेरा नाती है, टिमोथी. वह सात वर्ष का है,” नानी ने कहा. “वह चार्ली लूट्स तो मेरे लिए मुसीबत है,” उन्होंने धीमे से मेरे कान में कहा. “वह भयंकर ड्राईवर है, हमेशा अपनी व्हीलचेयर मेरी व्हीलचेयर से टकरा देता है. उसे तो सड़क पर जाने की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए.”

मैंने अनुमान लगाया कि सड़क से उनका तात्पर्य था गलियारा. मुझे लगा कि सड़क की बात करना सिर्फ एक मज़ाक था. चार्ली लूट्स निकट आ रहा है.

मैं नानी की चेयर के आगे आकर उनका बचाव करता हूँ.



हम चारों गेम्स रूम के भीतर गए ताकि हम आपस में बातें कर सकें.

नानी ने कहा कि आज बिंगो खेल में वह जीत गईं थी. उन्होंने कहा कि बीच-बॉल में गेंद लपकने में वह सबसे अच्छी हैं. वह बहुत प्रफुल्लित हैं. मुझे लगता है कि इस जगह को वह पसंद करती हैं.

मैं उनकी व्हीलचेयर को उस कमरे में घुमाता हूँ. मैं हर खिड़की पर व्हीलचेयर रोकता हूँ ताकि वह बाहर देख सकें.

वह संकेत करती हैं, "वहाँ एक फिंच पक्षी है, टिम."

हम उस पक्षी को डाल पर उतरता और फिर दूर जाते हुए देखते हैं.

"क्या अभी भी मेरे कमरे की खिड़की के बाहर बने फीडर पर फिंच पक्षी दाना चुगने आते हैं?"

"हाँ," मैं कहता हूँ. "और चींटियाँ भी."

एक नर्स नानी का खाना लेकर आता है और ट्रे पर रख देता है. फिर वह नानी के गले पर एक नीले रंग का बिब बाँध देता है.

नानी को देखकर मुझे शर्म आती है. एक बिब!

मुझे लगता है कि नानी मेरी भावनाओं को समझ रही है. वह कुहनी से मुझे हल्का सा धक्का देती है. “तुम्हें अपने पिता के लिए एक ऐसा बिब ले लेना चाहिए, टिम.” वह कहती हैं. “उनकी टाई गंदी होने से बच जायेगी.”

“आपका खाना अच्छा लग रहा है,” माँ ने ख़ुशी से कहा. मुझे ख़ुशी होगी जब हम घर जायेंगे और माँ को अपनी साधारण आवाज़ वापस मिल जायेगी.

“खाना ठीक है, हर दिन आइस क्रीम मिलती है,” नानी ने वैनिला आइस क्रीम मुझे दी परन्तु मैंने लेने से इनकार कर दिया.

जब वह खाना खा लेती हैं तो पिता उनका बिब खोल देते हैं और खाने की ट्रे को हटा देते हैं. हम वापस जाने को तैयार हैं. माँ खूब बातें करती है. वह पूछती है कि क्या नानी ठीक से सो पाती हैं. जो नया सिरहाना वह लाई थी, क्या वह सही है.

“वह सही है,” नानी ने कहा. “सब ठीक है,” उनकी आवाज़ भी बहुत प्रसन्नचित लगती है.





वहाँ से वापस जाना कष्टदायक है. लेकिन अब बात करने को कुछ भी नहीं है. हम नानी को छोड़ कर नहीं जाना चाहते.

हम अलविदा कहते हैं.

“फिर आना, टिम्मी,” वह धीमी आवाज़ में धीमे से मुझे कहती है.

“अवश्य,” मेरा गला भर आया है और मैं अपना चेहरा दूसरी ओर कर लेता हूँ ताकि वह देख न पायें.

पिता पूछते हैं कि क्या वह उन्हें वापस दूसरों के पास ले जाएँ लेकिन नानी मना कर देती हैं. वह कुछ देर वहीं उस कमरे में रहेंगी. “वह पर्ल बहुत बकबक करती है,” उन्होंने कहा.

हम ने पर्ल और विन्नी और चार्ली लूट्स को अलविदा कहा और उन्होंने हमें शीघ्र फिर से आने के लिये कहा.





जैसे ही हम बाहर आये माँ रोने लगीं और हम सब रुक गये. पिता ने उन्हें सँभाला.

“रोओ नहीं, माँ,” मैंने कहा. “यह जगह बहुत अच्छी है. साफ़-सुथरी है. नानी भी प्रसन्न लगती हैं.”

माँ ने नाक से बहता पानी साफ़ किया और अपना सिर उठाया. “मैं तुम्हारी फोटो उन्हें देना ही भूल गयी.”

मैंने अपना हाथ आगे किया. “मैं भीतर जाकर दे आता हूँ.”





जैसे ही रैंप पर भागता हुआ मैं भीतर गया मैंने माँ को कहते हुए सुना, “अगर मैं उन्हें घर ले आ पाती. अगर मैं.....”

मैं झटपट गलियारे के पार गया.

पर्ल हँसते हुए बोली, “तुम तो सच में बहुत जल्दी यहाँ आ गये.”

“क्या यह लड़का वही नहीं है जो एक मिनट पहले आया था?” चार्ली लूट्स ने पूछा. मुझे लगता है कि वह मज़ाक कर रहे हैं. लेकिन वह सच में दुविधा में थे.

“मैं कुछ भूल गया था,” मैं धीमे से बोला.

नानी अभी भी गेम्स रूम में थी. उनकी ट्रे वहीं थी जहां पिता रख गये थे. बिब ट्रे के ऊपर पड़ा था. बलून छत के साथ लगा हुआ था. उनका सिर झुका हुआ था और वह रो रहीं थी.

मैं डर जाता हूँ. “नानी!” मैंने फुसफुसा कर कहा.

जब वह मुझे देखती हैं तो सीधा बैठने का प्रयास करती हैं. लेकिन बैठ नहीं पाती.

मैं झटपट पास आकर उनकी सहायता करता हूँ. फिर मैं उन्हें अपनी फोटो देता हूँ. “माँ आपको यह देना भूल गयी थी.”

वह फोटो को एक हाथ दूर रख कर देखती हैं. “सुंदर है,” वह कहती है और फिर, “मुझे खेद है, टिम. मैं नहीं चाहती थी कि तुम मुझे ऐसी दशा में देखो.”

मैंने उनकी बाँह को छुआ. “कोई बात नहीं.”

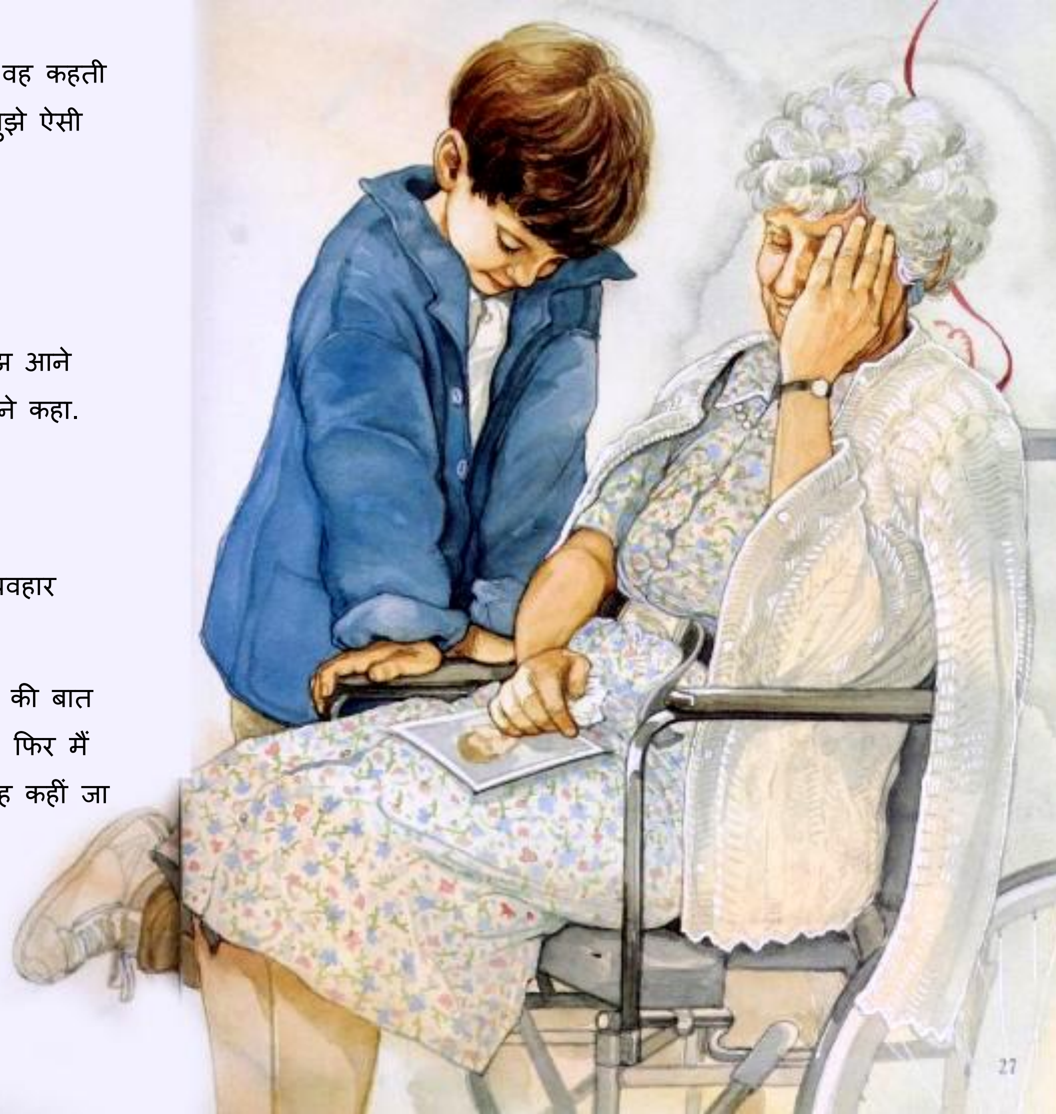
“किसी से न कहना,” वह बोलीं.

“आपका तात्पर्य है कि माँ को न बताऊँ?” मुझे अब समझ आने लगा. पहले मुझे समझ नहीं आया था. “माँ भी रो रही थी,” मैंने कहा. “बाहर जाकर. वह बहुत रोती है.”

“मेरे सामने तो वह कभी नहीं रोती,” नानी ने कहा.

“और आप भी उनके सामने नहीं रोतीं. आप दोनों ऐसे व्यवहार करते हो कि जैसे कुछ भी गलत नहीं है.”

“नहीं, नहीं,” अचानक मैं सब समझ जाता हूँ. “अपने मन की बात बता देना अच्छा होता है. सच में. फिर उतना डर नहीं लगता.” फिर मैं वापस चल दिया. “यहीं रहें!” यह बात मूर्खतापूर्ण थी क्योंकि वह कहीं जा नहीं सकती थीं.





मैं दौड़ कर बाहर आया. “माँ! पिताजी! नानी को आपकी ज़रूरत है.”

“क्या? क्या हुआ?”

“ज़रा भीतर चलो,” मैं तुरंत मुड़ा. माँ और पिता मेरे पीछे दौड़े आये.

“क्या तुम वही लड़के नहीं............?” चार्ली लूट्स कहने लगा लेकिन मैं उनको समझाने के लिए मैं नहीं रुका.

हम गेम्स रूम के दरवाज़े के पास खड़े हैं. और वहां नानी व्हीलचेयर में बैठी हैं, अपने में सिमटी हुई. उनकी आँखों से आंसू बह रहे हैं.

माँ भाग कर उनके पास जाती है और उन्हें थाम लेती है. पिता भी वैसा करते हैं. हम सब इकट्ठे हैं और कह रहे हैं, “हमें आपकी बहुत याद आती है, आपकी कमी महसूस होती है.”

और नानी कहती हैं, “यहाँ सब ठीक है. लेकिन, ओह, काश मैं घर जा सकती.”

“ऐसा ही होगा,” माँ ने उत्तेजना से कहा, “हम ऐसा कर के रहेंगे.”

वह नानी के बालों को सहलाती है और नानी उसके ऊपर झुक जाती हैं. फिर वह सीधी बैठ जाती हैं और कहती हैं, “तुम जानते हो टिम! मैं इस व्हीलचेयर से तंग आ चुकी हूँ. इसके बदले तो मैं कनवर्टिबल कार में बैठना चाहूंगी, लाल रंग की कनवर्टिबल में.”

“देखो, चार्ली लूट्स आ रहा है!’ मैंने कहा. हम हंस पड़े. मुझे अच्छा महसूस हो रहा है. लेकिन फिर भी एक उदासी छाई है. क्योंकि शायद नानी कभी भी कार में न बैठ पाएंगी. परन्तु क्या पता बैठ भी पायें.



मैंने ऊपर गुब्बारे की ओर देखा. मैं सोचने लगा कि उस पर छपे शब्द से मुझे लज्जा क्यों महसूस हुई थी. यह तो सबसे अच्छा शब्द है.

प्यार

समाप्त